L-6 Skt VII

Page No.
Date 25/04/2020

सदाचार:

(3) सरलार्थ → हमें सच बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए, अप्रिय सच नहीं बोलना चाहिए, और प्रिय झूठ नहीं बोलना चाहिए, यही सदा से चला आ रहा सनातन धर्म है।

(4) सर्वदा व्यवहारे स्यात् औदार्यं सत्यता तथा।
ऋजुता मृदुता चापि कौटिल्यं न कदाचन।

सरलार्थ → सदा हमारे व्यवहार में उदारता, सच्चाई, सरलता और नम्रता होनी चाहिए किन्तु व्यवहार में कभी भी कुटिलता नहीं होनी चाहिए

(5) श्रेष्ठं जनं गुरुं चापि मातरं पितरं तथा।
मनसा कर्मणा वाचा सेवेत सततं सदा।

सरलार्थ → श्रेष्ठ व्यक्ति गुरु की तरह ही माता और पिता की भी सदा मन, कर्म, वचन से सेवा करता है।

(6) मित्रेण कलहं कृत्वा न कदापि सुखी जनः।
इति ज्ञात्वा प्रयासेन तदेव परिवर्जयेत्।

सरलार्थ → मित्रों के साथ झगड़ा करने वाला व्यक्ति कभी भी सुखी नहीं हो सकता। ऐसा जानकर उस झगड़े से बचने का प्रयास करना चाहिए।

गृहकार्य - नोटबुक में साफ़-साफ़ लिखें